VAISESIKA - NON-EXISTENCE

वैशेषिक - अभाव

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

वैशेषिक-दर्शन का यह सातवाँ पदार्थ है।यह एक अभवात्मक पदार्थ है जबकि अन्य छः भाव पदार्थ हैं।अभाव का अर्थ होता किसी वस्तु का न होना, वह भी किसी विशेष काल में किसी विशेष स्थान पर अनुपस्थित होना जैसे-रात में आकाश में सूर्य का न होना वैसे ही निश्चित रूप से मालूम होता है जैसे चंद्रमा या तारोँ का होना।कणाद ने पदार्थों में अभाव का नाम निर्देश नहीं किया है, इससे कुछ लोग समझते हैं कि वे छः पदार्थ ही मानने के पक्ष में थे। लेकिन वैशेषिक-सूत्र में कई जगह अभाव का प्रमेय के रूप में उल्लेख पाया जाता है।इसके अतिरिक्त प्रशस्तपाद भाष्य में अभाव का सविस्तार से वर्णन मिलता है।इससे यह ज्ञात होता है कि छः भाव पदार्थ के अतिरिक्त सातवाँ पदार्थ अभाव भी महर्षि कणाद को स्वीकार था।

जिस प्रकार भाव पदार्थ होते हैं, उसी प्रकार अभाव पदार्थ भी होते हैं।अभाव पदार्थ के अनुपस्थिति में बहुत चीजों का ज्ञान असम्भव हो जायेगा।भाव के बिना अभाव को और अभाव के बिना भाव को नहीं जाना जा सकता।न्याय-वैशेषिक दर्शन में अभाव को भाव का प्रतियोगी और भाव को अनुपयोगी कहा गया है।अभाव को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि,"जिस पदार्थ का ज्ञान उसके विरोधी पदार्थ के ज्ञान के बिना असम्भव है, वह अभाव पदार्थ है अर्थात अनुपयोगी में प्रतियोगी की अनुपस्थिति अभाव है,जैसे-दूध में शक्कर नहीं है।दूध अनुपयोगी है जिसका प्रतियोगी दूध का अभाव है।यहाँ दूध का भाव, इसलिये भाव की सत्ता अभाव की सत्ता के साथ हमेंशा बनी रहती है।

वैशेषिक दर्शन में अभाव को दो भागों में विभाजित किया गया है : -

1 संसर्गाभाव (Non-existence of correlation)

2 अन्योन्याभाव(Mutual Non-existence)

1 संसर्गाभाव - जब दो वस्तुओं या पदार्थों में आपस में संसर्ग का अभाव उत्पन्न होता है तो उसे संसर्गाभाव कहते हैं जैसे कारण में कार्य का ना होना अर्थात यदि कार्य की उत्पत्ति नहीं हुई है तो वह अभाव है ।इसी प्रकार घड़े का निर्माण बिना मिट्टी के नहीं हो सकता जब तक मिट्टी से घड़ा नहीं है तब तक घड़े का अभाव है। इसी तरह मनुष्य के देहावसान होने के पश्चात उस मनुष्य का संसार से अभाव हो जाता है जब तक वह जीवित अवस्था में होता है उसका संसार से संसर्ग बना रहता है किंतु मरणोपरान्त उसका संसर्गाभाव हो जाता है।

संसर्गाभाव के तीन भेद हैं : -

1 प्रागभाव(Prior Non-existence)

2 ध्वंसाभाव(Posterior Non-existence)

3 अत्यन्ताभाव(Absolute Non-existence)

प्रागभाव - प्रागभाव अनादि होता है लेकिन सान्त होता है प्रागभाव का मतलब है उत्पत्ति से पहले किसी चीज का अभाव होना वस्तु की उत्पत्ति से प्रागभाव का अंत हो जाता है ।एक घड़े की उत्पत्ति होती है उत्पत्ति से पहले उसका प्रागभाव था यह प्रागभाव कभी शुरू ही नहीं हुआ लेकिन इसका अंत हो गया। जब घड़ा बन गया तब घड़े के प्रागभाव का नाश हो गया इसलिए प्रागभाव अनादि और सान्त माना गया है।

ध्वंसाभाव - किसी वस्तु के नष्ट हो जाने पर उत्पन्न होने वाला अभाव ही ध्वंसाभाव कहलाता है। ध्वंस का अर्थ है नाश या नष्ट। किसी कार्य का विनाश होने पर जो अभाव की उत्पत्ति है वह ध्वंसाभाव कहलाता है ।घड़े के टूटने या नष्ट होने पर घड़े का अभाव उत्पन्न हो जाता है जिसका कभी अंत नहीं होता क्योंकि उस टूटे घड़ी को दोबारा नहीं बनाया जा सकता। इसलिए ध्वंसाभाव सादी और अनंत है ।जो घड़ा नष्ट होता है फिर वही घड़ा नहीं बन सकता भले ही दूसरा नया घड़ा क्यों न बना लिया जाए।

अत्यन्ताभाव - अत्यन्ताभाव का मतलब है भूत, वर्तमान और भविष्य में दो वस्तुओं के सम्बन्ध का बिल्कुल अभाव।रूप में वायु न भूतकाल में था, न वर्तमान काल में है और न भविष्य में रहेगा।इसलिए रूप का वायु में अत्यन्ताभाव है।इस अभाव को त्रैकालिक अभाव के नाम से भी जाना जाता है।इस अभाव की न उत्पत्ति होती है और न विनाश।अत्यन्ताभाव अनादि-अनन्त होता है।

2 अन्योन्याभाव - अन्योन्याभाव का मतलब होता है दो वस्तुओं की भिन्नता।इस अभाव का सांकेतिक उदाहरण होगा 'क' 'ख'नहीं है।वास्तविक उदाहरण है - घड़ा कपड़ा नहीं है।इसका अर्थ है घड़े में कपड़ा समवेत नहीं है बल्कि कपड़ा घड़े से बिलकुल अलग है।इस भिन्नता का भाव समाप्त नहीं होता और न ही यह स्पष्ट किया जा सकता है कि यह भिन्नता कब और कैसे उतपन्न हुई।इसे नित्य कहा गया है।

अभाव के जितने भी प्रकार माने गए हैं उनकी कुछ न कुछ उपयोगिता अवश्य है।